MkYMk Mk;jh 2011

कल अचानक डोलडा जाने की योजना बना डाला। चूंकि फादर फ्रैंकन और माइकेल केरकेट्टा खूंटी में लोयोला इंटर कॉलेज भवन की आशिष में साथ चले थे, उनको भी डोल्डा चलने को निमंत्रण दे डाला। दोपहर के खाने के बाद, हम तीनों चले। मकडू के साथ जमीन संबंधी बातें भी करनी थीं सो उनसे आग्रह किया कि वह हमें कुछ संभावित जमीनों के बारे में बताते चले। खूंटी–मुरहु मार्ग में करीब पांच किलोमीटर चलने के बाद उसकी अपनी जमीन आती है जो कि कुल दस एकड़ के बराबर हो। सड़क से करीब 500 मीटर के फासले पर। ऐसा अनुमान किया जा रहा है कि पाराद्वीप से एक पाइप लाइन बिछाने का प्रोजेक्ट है जो सारे झारखंड के लिये तेल की आपूर्ति करेगा, जो ठीक उसी जमीन के पास से गुजरेगा और पास में एक बहुत बड़े डीपो के खुलने की योजना है। कुल मिला कर कहा जा सकता है कि वह इलाका बहुत महत्वपूर्ण हो जायेगा। इलाका अच्छा लगा। मकडू ने फिर हमसे आग्रह किया कि हम एक दूसरी जमीन को भी देखते चलें। मुरहु से दो किलोमीटर पहले एक पुरानी लाह की फैक्टरी थी वह अब निष्क्रिय हो गयी है। कुल सत्रह एकड़ की जमीन एकदम सड़क पर है लेकिन इसी लिये कुछ दाम में भी उंचाई देखी जा सकती है। पूरी जमीन पर पत्थर का घेरा किया गया है जो कि अब भी ठीक – ठाक है। सुना कि कुछ अन्य धर्मसंघी भी इस जमीन को पाने की कोशिश कर रहे हैं। सबकुछ देखने के बाद हम मकडू से विदा लेकर डोल्डा की ओर चले।

डोल्डा के रास्ते में दो नदियां हैं। पहली नदी जो इटटी कहलाती है, में पूलिया का निर्माण कार्य पिछले साल से जारी है जो कि माओवादियों के लेवी के कारण सुस्त गति से चल रहा है। उम्मीद की जाती है कि इस बरसात के पहले काम पूरा कर लिया जायेगा। दूसरी नदी जो डोल्डा से ठीक पहले पड़ती है, जेस्विटों की मदद से मकडू ने नदी पर ही कंक्रीट का रास्ता बना दिया है जिससे वाहन आराम से चल सकते हैं। सर्वदा से कुल 16 किलोमीटर की दूरी करीब 45 मिनट में पूरी की जाती है। गनीमत है कि अभी रास्ते में नयी मिटटी भरी गयी है, इसलिये कुछेक स्थानों को छोड़कर बाकी जगहों में गाड़ी लगभग आराम से चलती है। दूसरी नदी से उस पार जो रांची के अड़की बलॉक में पड़ता है, में सड़क के कालीकरण का काम जारी है। केन्द्र के फंड से ही यह काम जारी है। लगता है कि चरमपंथियों के प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से यह सड़क बनायी जा रही है। इस पर चरमपंथियों ने भरपूर लेवी उठाया है, इसलिये सड़क में गुणवत्ता हो इसकी कोई गारंटी नहीं है।

डोल्डा पहुंचकर हम सबसे पहले पानी का हाल जानना चाहते हैं क्योंकि हमें बताया गया है कि पानी की बेहद किल्लत होने वाली है। फादर कमल बागे जो विद्यालय में प्रधान के रूप में काम करते हैं, हमें बताते हैं कि फादर जकरियस पुर्ति पानी के प्रबंध के लिये ही नलकूप बनाने वाली गाड़ी की खोज में गये हुए हैं। चूंकि गाड़ी भारी भरकम है, रास्ता पहले ठीक करना होगा। मुरहु से संभव नहीं हो तो क्या दूसरा रास्ता उनके लिये बनाया जा सकता है? इन सवालों के साथ वे सुबह में ही बाहर निकल पड़े हैं। हम कैम्पस के सभी चापाकलों का निरक्षण करने लगते हैं। जनवरी का महीना है इसलिये पानी तीन चापाकलों में चालू है। लेकिन अनुभव के आधार पर लोगों का कहना है कि मार्च के आते–आते सभी सूखने लगते हैं और इसीलिये सभी को सिर्फ एक कुवें पर आधारित रहना पड़ता है, जो कि इस बार लगभग सूख गया है और अक्टूबर के महीने से ही पानी की पंप से आपूर्ति बंद है।

विद्यालय में कुल सात सौ बच्चे हैं। जो हॉस्टेल का फीस नहीं दे पाते वे दूर दराज से पैदल ही स्कूल पहुंचते हैं। पिछली बार जब फादर जकरियस ने फीस बढ़ाने की बात की थी तो अभिभावकों से दो रूपये की बढ़ोत्तरी के लिये तीन घंटे की बहस हुई थी तब कहीं महीने में अधिकतम बीस और न्युनतम बारह रूपये पर बात टिकी थी। याद रहे कि डोल्डा रांची मिशन के पहले स्थानों में से एक है जहां मिशनरी पहले–पहल आये थे। पूरे सौ सालों के बाद यहां के स्कूल को क्लास छः से सात और हाल में आठ तक पहुंचाया गया है। उम्मीद की जाती है कि अगले दो सालों में दसवीं कक्षा भी खोल दिया जायेगा। स्टाफ की भारी कमी है जो कि नयी सिस्टरों के आने से एक हद तक पूरी की जा सकती है। उनके वेतन का क्या किया जाए यह एक बहुत बड़ा सवाल है।

मार्च के महीने में क्रूस की पुत्रियों का धर्मसमाज अपने तीन धर्म बहनों को यहां भेजने वाला है। इस संबंध में करार हो गया है। उनके आवास का प्रबंध और विशेषकर सुरक्षा और पानी का प्रबंध करना जरूरी है। चूंकि स्थान कठिन है, इसलिये सिस्टरों को निराश करने की कोशिश नहीं है। दो साल पहले, एक धर्मसमाज इस स्थान को छोड़कर जा चुका है। वे इस स्थान में टिक कर रह सकें, इस बात का ध्यान रखा जा रहा है।

हम पूरे कैम्पस का मुआवना करने लगते हैं कि जल प्रबंधन के क्या उपाय हो सकते हैं जिससे बरसात के पानी को सुरक्षित रखा जा सके। पूरा डोल्डा का कैम्पस एक छोटी पहाड़ी पर बसा है। यह एक इत्तफाक है कि पूराने डाड़ी को बड़ा किया गया जो अबतक पानी की आपुर्ति करता रहा। सुझाव दिया गया कि उसके ईद–र्गिद तलाबनुमा गढ़डे बनाये जाएं जिसमें बरसात का पानी सुरक्षित किया जा सके। कंकडीली जमीन में पानी टिके या न टिके इसकी कोई गारंटी नहीं है। उसके उपर नीचे पहाड़ की गहराई भी है। किसी ने सुझाया कि इस्रायल की तरह गढ़डे बनाकर उसके तलों में पलास्टिक की

चादर डाल दी जाय जिससे पानी का ठहराव तो कम से कम हो सकता है। एक ही तकलीफ उसमें हो सकती है कि भारतीय पलास्टिक के चादर कमजोर हुआ करते हैं और महीनों के पानी का वजन ढ़ोते–ढ़ोते फट जाया करते हैं। फिर भी प्रयास तो किया ही जा सकता है। फिर सुझाव आया कि जो वहां पर लंबे समय से हैं उनकी मदद से ही पानी के प्रबंधन को मिल बैठकर सुलझाया जा सकता है।

शाम होने को आया है। हम लौटने लगते हैं। वादियों में पतझड़ आरंभ हो गया है। सखुवे के पेड़ों से पत्तियां झड़ने लगी हैं। सरहूल के समय नयी कोपलों के साथ एकबार वादियों में सुगंध महकने लगेगी। हमारी गाड़ी चलने लगी है। कोई सवाल करता है कि सड़कों के ईद–र्गिद गांव नजर नहीं आते हैं। वास्तव में आदिवासी सभ्यता सड़कों वाली सभ्यता नहीं है। यह खेत–खलिहान वाली सभ्यता है। सड़कों से वास्ता बहुत बाद में आया है। कुछ लोग अब भी इसकी जरूरत महसूस नहीं करते हैं। उनके पैदल चलने और मवेशियों के लिये पगडंडियां ही काफी हैं। रात में उन्हें रोशनी चाहिये सिर्फ सात बजे तक जब तक कि उनका खाना न बन जाये। एक बार खा–पीकर वे सो जाते हैं अगली सुबह के लिये। इस सभ्यता के लिये नयी सुबह की इंतजार लंबी है।